PARIVARTAN
परिवर्तन

TAKSHILA
तक्षशिला

चहकने की ललक

अंक – तेईस
अप्रैल – जुलाई 2023

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

बाल संवाद

प्यारे दोस्तों

मैं हूँ चहकने की ललक। इस अंक 23 में मेरे बाल लेखकों ने मेरे लिए मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी कुछ बदलाव हुआ है। इस बार तो मेरे प्यारे लेखकों ने मुझे खुद से तैयार किया है। सर्वप्रथम 2014 में प्रकाशित किया गया जिसमें मेरे बाल लेखकों ने अपनी रचना को प्रदर्शित किया उस दरमियाँ उन्हें बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिए अपनी रचना लिखते रहें। आशा करती हूँ कि आगे भी ऐसी ही अच्छा लिखें। यह परिवर्तन बाल अखबार सभी बच्चों का अखबार है। जिसमें बच्चे अपनी अपनी कला को दिखाने की कोशिश करते हैं।

आपका साथी मैं
चहकने की ललक

आइसक्रीम

आइसक्रीम मुझे बहुत पसंद है मैं एक बार बाजार गई थी। जब मैं वहां गई तो आइसक्रीम देखा फिर अपनी मम्मी से बोली मम्मी आइसक्रीम खरीद दो। मुझे आइसक्रीम खाना है। इसके बाद मैंने मम्मी से जिद्द किया तो मम्मी ने मुझे आइसक्रीम दिलवाया। उसके बाद मैं खाते-खाते घर आ गई।

नाम : प्रिया कुमारी
कक्षा : 8, गाँव : धर्मपुर

आपबीती

हम फरीदाबाद गए थे। एक महीना रहे थे। उसके बाद हम अपना घर आ रहे थे तो फरीदाबाद से है बागचेवा आए उधर से हम ऑटो पकड़े कि हम ओड आए हम उस रेलगाड़ी में हम बैठे थे तो उस रेलगाड़ी का नाम था सेंट्रल हम नई दिल्ली हम स्टेशन पर घंटे इंतजार किए तो रेल गाड़ी आई तो हम रेल पर बैठे थे उस रेलगाड़ी का नाम लिचवी था तो हम उस रेल गाड़ी में बैठे थे तो हमको दो लड़की से हमें मुलाकात हुई तो एक लड़की उसमें से बहुत बुरी थी और उसमें जो दूसरी लड़की थी तो बहुत अच्छी थी मेरे उससे बात हुआ एक दूसरे से बात किए नंबर लिए फिर हम लोगों की दोस्ती हो गई और मेरा स्टेशन आ गया और उतर गए।

नाम अंशु कुमारी
उम्र 14

आगामी थीम

1. सावन का महीना
2. हमारा विद्यालय
3. गांव का पोखर
4. हमारा देश

आम

गर्मी के दिनों में आम ज्यादा मिलता है। मुझे आम बहुत पसंद है। मेरे पापा जी मेरे लिए बाजार से रोजाना आम खरीद कर लाते हैं। वह आम बहुत मीठे और ताजे थे। वह आम मेरी मम्मी ने काटकर मुझे और मेरे भाई और मेरी बहन को दिया और खुद भी खाई और मैं अपने बगीचे में आम का पेड़ लगाई हूँ।

नामः अर्चिता सिंह
कक्षाः 8, गांव भीखपुर

खुले से प्रश्न

पेड़ के पत्ते नीले हो जाते तो क्या होता? परी के पंख नहीं होते तो क्या होता? घर नहीं होता तो क्या होता? अगर हमलोग पानी में रहते तो कैसा लगता? अगर स्कूल नहीं होता तो क्या होता? फसल नहीं होता तो क्या होता? लड़की नहीं होता तो क्या होता? अगर किताबें नहीं होते तो क्या होता? हम बच्चों को शिक्षा नहीं मिलता तो क्या होता? यह दुनिया नहीं होती तो क्या होता?

आम

एक दिन मेरा भाई आम लाया है बोली मुझे भी दो उसने मुझे नहीं दिया और खुद ही खा गया और मैं रोने लगी तो पापा ने बोले कि मैं बाजार जाकर तुम्हारे लिए आम लाऊंगा और फिर कुछ देर बाद पापा बाजार गए और फिर मेरे लिए आम लाए और फिर मेरा भाई आया और बोला कि मुझे भी दो मैंने नहीं दिया तो मम्मी से कहा उसे भी दे दो तो मैंने आम दे दिया।

नामः वंदना कुमारी
कक्षाः 8, गांवः भरौली

आम

हमारे घर दो आम का पेड़ है। आम उस पर मीठा मीठा फरा था। हम तोड़ कर खाते हैं और दूसरों को बांटते हैं। आम बहुत फरा था। गाँव के लोग कितने आते थे। आम के बहुत सीजन है। आम बहुत लोग तो बाजार में से खरीदते हैं। मेरे पापा ने आम खरीदे थे और लाए तो भाई-बहन मिलकर बहुत मजे से खाए हैं और दादी आई तो मम्मी ने कहा आम खा लीजिए।

नाम अंशु कुमारी, उम्र 13

आम (कविता)

देखो कितना आम रसीला
छिलका इसका पीला-पीला
लगता कितना ताजा है
आम फलों का राजा है

नामः सुगंधा कुमारी
गांवः खेम भटकन, कक्षाः 3

हमार बोली

हमारा नाम रितिका है। हम पाँच क्लास में पढ़ेली हमार गाँव बड़हुलिया है। हमारा खेलल पढ़ल नाचल कुदल गाना गावल बहुत अच्छा लगेला हमारा खाना में चिकन बिरयानी पसंद बा हम पढ़ लिख के सरकारी नौकरी करे के चाही नी अउरी अनाथ बच्चा के पढ़ावत हमारा सपना बा हम अपना जिंदगी में ईहे करे के चाही नी।

नाम रितिका
कक्षाः 5 गाँवः बड़हुलिया

पहेलियां

1. बचपन में थी हरे रंग की बड़ी हुई
   तो हो गई लाल जो भी मुझको
   मुँह में डाले हो जाए हाल बेहाल।
   उत्तर मिर्च
2. दिन में सोए रात में रोए जितना
   रोए उतना खोए।
   उत्तर मोमबत्ती

नामः प्रिया कुमारी
गाँवः नारायणपुर, उम्र 10 साल

पसीना

हमें गर्मी में पसीना आती है। हमें शरीर की गंदी सफाई पसीना से होती है। हमें पसीना बुरा लगता है। हमें पसीना बुरा लगता है। तो मम्मी बोलती है तो नहाते हैं और मजा आता है। शरीर ठंडा होता है। हमारे शरीर से बदबू नहीं आता है।

नामः रितिक कुमार
कक्षाः 8, गाँवः रुइयाँ, उम्रः 10 साल

बारात

मेरी दीदी की शादी में हमको बहुत मजा आया और खूब मेकअप किए थे। और खूब डांस किए थे। हम लहंगा बहुत अच्छा पहने थे और खाना खाने गए तो बहुत टेस्टी लगा तो बहुत ज्यादा खाए थे। बारात आया तो अपने जीजा जी की आरती दिखाई और रसगुल्ला ललचाई तो खूब मजा आया था। जब दीदी की विदाई हुई तो मैं बहुत रोई थी।

नाम: रानी कुमारी
ग्राम: बंगरा उज्जैन, उम्र: 13

नाम: खुशबु कुमारी
कक्षा: 8
गाँव : धर्मपुर

बारात

बारात में हम को बहुत मजा आया था। मटकोर में हम बहुत नाचते-नाचते थक गए थे। हम बारात में गये हमको बहुत मजा आया था। मटर पनीर को सब्जी बनी थी और पुडी हम पुडी खाये थे। हमको बहुत मजा आया था। सुबह मैं मामा साथ आ गये। और खुब मजा आया था। सुबह मे खीर पूरी बनाई नानी ने और हम सब बहुत मजे से खाए थे।

नाम: अंजली कुमारी
गाँव: धर्मपुर, कक्षा: 8

नाम: न्याशा कुमारी
गाँव : नारायणपुर, उम्र: 6

बारात

एक बार मैं अपने मामा के बारात में जा रही थी। हम सभी थोड़ी देर तक डांस किए और गाड़ी में बैठकर चले गये और शादी में पहुचकर हमने जाकर फिर से डांस करने के बाद हमने खाना खाया खाकर मैंने थोड़ा जहाँ पर गीत हो रहा था वहां पर जाकर बैठ गई और मैं गीत के मजे लेने लगी और उसके बाद मैं जहाँ पर शादी हो रही थी वहाँ पर गई और वहाँ पर बैठकर देखने लगी और देखते-देखते सो गई और सुबह उठकर मैं गाड़ी में बैठ गई और घर जाकर मैंने सबसे कहा कि मैं डांस खाना और गीत और रस्म के मजे लिए।

नाम: श्वेता कुमारी
ग्राम: बंगरा उज्जैन, उम्र: 13

नाम: अर्चना कुमारी
गाँव : खेम भटकन
उम्र: 6

बारात

मेरी बुआ की शादी में हमको बहुत मजा आया और खुब डांस किये। हम लहंगा पहने थे और मेकअप किए थे। खाना खाने गये तो बहुत अच्छा लगा और हम खुब खाये और बहुत अच्छा बारात आया था और अपने फूफा जी को आरती दिखाई जब रसगुल्ला खाने समय खुब ललचाने में मजा आया। जब मेरी बुआ की जब विदाई हुई तो मुझे बहुत रोना आया फिर मेरी बुआ चली गई।

नाम: सोनाली कुमारी, कक्षा: 8

नाम: शालिनी
गाँव : मियां भटकन
उम्र: 8

कविता

नन्हे-मुन्ने भोले बच्चे तुम क्या बनना चाहोगे। वीर-बनोगे धीर बनोगे। सागर से हम वीर बनेंगे। भारत माँ की रक्षा के हित तनमन से बली जायेंगे। दन दन दन चली गोलिया सीने पर हम खायेंगे। पर्वत भी गिर पड़े राहों में।

नाम: रितु कुमारी
गांव: नारायणपुर, उम्र: 9 वर्ष

नाम: ज्योति कुमारी
गाँव : खेम भटकन
उम्र: 9

रेलगाड़ी की यात्रा

एक बार मे अपनी मौसी के शादी मे रेलगाड़ी से जा रही थी तो मेरे बगल में एक महिला बैठी थी। उन महिला बैठी थी। उन महिला के दो पुत्र थे। उन लड़कों से मेरी दोस्ती हो गई। उन लड़कों ने मुझसे पूछा दीदी आप कहाँ जा रही हैं। मैंने कहाँ मैं अपनी मौसी के शादी में जा रही हूँ फिर मैंने उन बच्चे से पूछा तुम लोग कहाँ जा रहे हो बच्चों ने कहा हम दिल्ली घूमने जा रहे हैं फिर उसके बाद मैं बच्चों के साथ खेलने लगी उसके थोड़ी देर बाद बच्चे खाना खाकर सो गए और मैं भी खाकर सो गई फिर जब सुबह हुआ तो उन महिला का स्टेशन आ चुका था फिर मैंने उन बच्चों को अलविदा किया और मुझे रेलगाड़ी में यात्रा करना अच्छा लगता है

नाम: सोनम सिंह, गाँव: धर्मपुर, उम्र: 13

मेरा ट्रेन का सफर

एक दिन मैं अपने परिवार के साथ मामा के घर ट्रेन में बैठे कर जा रही थी तो ट्रेन में बहुत भीड़ थी उसमें बहुत तरह तरह के आदमी थे मेरा सफर लगभग एक घंटा का था जब हम सब ट्रेन से उतरे तो बहुत सारी दुकानें थी वहां से मेरे पापा ने समोसा और जलेबी बहुत अच्छे-अच्छे समान खाने के लिए लाए हम सबको खा कर बहुत अच्छा लगा

नाम: प्रिया कुमारी
गाँव: खेम भटकन, उम्र: 12 साल

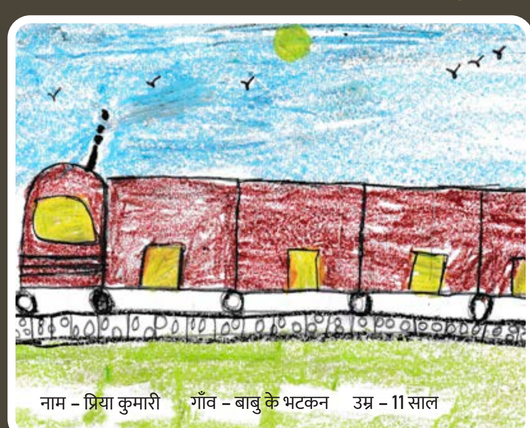
नाम – प्रिया कुमारी गाँव – बाबु के भटकन उम्र – 11 साल

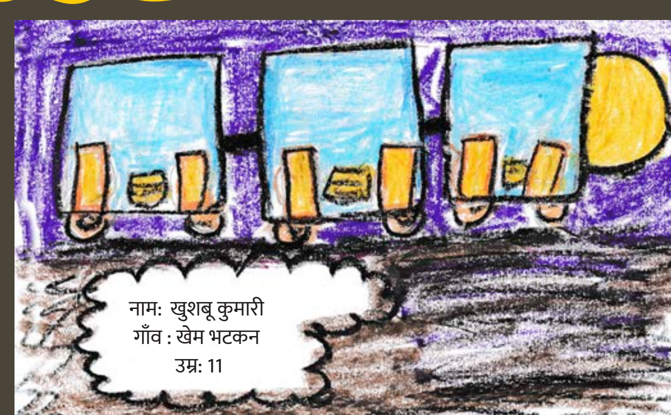
नाम: खुशबू कुमारी
गाँव : खेम भटकन
उम्र: 11

नाम: रेहांश कुमार
गाँव : खेम भटकन
उम्र: 3

आम

मेरे पापा ने कल आम लाए थे। बहुत पक्का था और बहुत मीठा भी था। मेरे माँ ने धो, काटकर हम और मेरे बड़े भाई, छोटे भाई और मैं भी सब बहुत आम खाये। और मेरे पापा भी खाए। और बड़ी मम्मी की बेटी के घर से आम आया था। हम बहुत आम खाए और मेरी मौसी के घर पर गया था और मेरे मामा के घर पर भी गया था और गाँव में भी बँटया था। फिर भी बच गया था तो हम लोग फिर बहुत खाये।

नाम: सोनाली कुमारी, उम्र: 13

रेलगाड़ी

रेलगाड़ी पर मैं एक बार चढ़ी हूँ। मैं सिवान से दिल्ली गई थी तब दिल्ली में मेरी नानी जी के घर गई थी। मेरे साथ मेरी मम्मी मैं और मेरे भाई गए थे। रेलगाड़ी में समोसे ठंडा पानी बिकता है और मैं खा नहीं पाई क्योंकि मैं रेलगाड़ी में सो गई थी। जब मैं सो के उठी तो मम्मी बताई तो बहुत लालच आई तब मैं और मेरे भाई रेलगाड़ी में बहुत मजे किये। उसके बाद हमलोग नानी के घर पहुँच गए।

नाम: प्रिया कुमारी, गाँव: बाबू भटकन, उम्र: 11

नाम: रितिक कुमार
गाँव : रुइया बंगरा, उम्र: 10

शिक्षकों की कलम से

हमारी शिक्षा व्यवस्था सदियों से चली आ रही व्यवस्था से थोड़ा भिन्न हो रही है। पहले की शिक्षा प्रणाली में शिक्षक सर्वेसर्वा हुआ करते थे, जहाँ बच्चों की भूमिका बस शिक्षक द्वारा दिए गए ज्ञान को बिना सोचे प्रश्न किये स्वीकारना हुआ करता था, पर आज हम कर के सीखना तर्क करना फिर बच्चों द्वारा उसे स्वीकारना जैसी पद्धति की ओर अग्रसर है। हमारी शिक्षा प्रणाली में यह बदलाव एक लोक- तांत्रिक शिक्षा की ओर इशारा करती है। क्योंकि बच्चों की सोचने की क्षमता हम बड़ों से कही ज्यादा होती है। वह किसी विषय को लेकर हम बड़ों से ज्यादा सोच सकते हैं। तर्क कर समाधान तक पहुंच सकते है। यह तभी संभव है जब हम बच्चों को अवसर दे।

राजवर्द्धन,
कला प्रशिक्षक, (परिवर्तन)